B.A. III Hindi Hons के छात्रों को लिए

काव्य का प्रयोजन

डॉ॰ सतीश चन्द्र पाठक
हिन्दी विभाग, एस॰एस॰ कॉलेज,
जहानाबाद

इस सृष्टि में एक विधान चला आ रहा है कि कोई भी कार्य निष्प्रयोजन नहीं होता। जब विद्यार्थी घर से कॉलेज आते हैं तो उसका भी एक प्रयोजन होता है यदि बाजार जाते हैं तो उसका भी एक प्रयोजन होता है। तात्पर्य यह कि इस संसार में निष्प्रयोजन कुछ भी नहीं है। जब ऐसा विधान है तब भला काव्य का भी कोई न कोई प्रयोजन अवश्य होगा। अन्यथा काव्य की रचना भला कोई क्यों करता। काव्य सृजन में कोई न कोई प्रयोजन अवश्य होगा। इस विषय पर भिन्न-भिन्न विद्वानों ने अपनी दृष्टि से विचार किया है और उनके विचारों में प्रयोजन की भिन्नता भी स्पष्ट दिखलाई पड़ती है। संस्कृत के आचार्यों का तो ऐसे चिन्तनपरक विषयों में मन खूब रमता रहा है। इसीलिए संस्कृत के आचार्यों ने इस विषय पर गहन विवेचन - विश्लेषण किया है।

सर्वप्रथम आचार्य भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में काव्य के प्रयोजन पर प्रत्यक्ष विचार किया। चूंकि उस समय तक काव्य एवं नाटक का पार्थक्य नहीं हुआ था अतः जो नाटक के प्रयोजन हैं उसे काव्य का भी मान लिया गया - यह नाट्यशास्त्र दुःखों से, श्रम से एवं शोक से पीड़ित लोगों को इस संसार में सुख प्राप्ति का साधन होगा।

इस प्रयोजन पर समीक्षकों का एक वर्ग आपत्ति करता है कि इसमें काव्य का जो मूल अभिप्रेत है 'आनन्द' उसकी चर्चा नहीं है। जबकि सच्चाई है कि 'आनन्द' की ध्वनि तो इस प्रयोजन से निकलती ही है।

आचार्य भामह ने अपने 'काव्यालंकार' में काव्य प्रयोजन पर बड़ी सूक्ष्मता से विचार किया है। वे लिखते हैं -

धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधु काव्यनिषेवणम्॥

अर्थात् सत्काव्य के अनुशीलन से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष तथा कलाओं में विचक्षणता प्राप्त होती है साथ ही कीर्ति एवं आनन्द की भी उपलब्धि होती है। भामह ने आगे स्पष्ट किया है कि काव्य सहृदय को उपर्युक्त लाभ देते हैं। वहीं कवि को यश और सत्कीर्ति की प्राप्ति होती है। अर्थात् सहृदय के लिए काव्य का प्रयोजन अलग है और कवि के लिए अलग।

आचार्य वामन भी इस मत की लगभग पुष्टि करते हुए कहते हैं - 'काव्यम् सद्दृष्टार्थं प्रीतिकीर्ति हेतुत्वात्' काव्य के दो प्रयोजन - (1) प्रीति या आनन्द की प्राप्ति और दूसरा कीर्ति। प्रीति रसिक के लिए और कीर्ति कवि के लिए। आचार्यों की एक लम्बी परम्परा है जो काव्य प्रयोजन जैसे प्रयोजनीय विषय पर गंभीर चिन्तन मनन करती है। रुद्रट, मम्मट, दण्डी, अभिनवगुप्त इत्यादि आचार्यों ने इस विषय पर लेखनी चलाई है। समस्त आचार्यों ने कमोबेश एक ही प्रकार की बातें की हैं। किन्तु मम्मट ने बड़ी ही स्पष्टता काव्य प्रयोजन पर विचार करते हुए लिखा है -

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥

इनकी दृष्टि में काव्य की रचना या काव्य का प्रयोजन है - यश की प्राप्ति, धन की प्राप्ति, व्यावहारिक ज्ञान की उपलब्धि, अनिष्ट का नाश, अलौकिक आनन्द की सद्यः प्राप्ति तथा कान्ता के समान मधुर उपदेश।